॥ वन्देमातरम् ॥

नवीन राजस्थान

एक साल का मू० ३॥
छः मास का मू० २

सहस्रबाहुस्त्वमहं द्विबाहु स्त्वं सैन्ययुक्तो ह्यहमेक एव ।
त्वं चक्रवर्ती जनसेवकोऽहं, तथापि नो पश्यतु तर्कमर्कः ॥

प्रवर्तक श्री पथिक

वर्ष १] अजमेर: भाद्रपद कृष्ण १२ रविवार ता० २० अगस्त १९२२ ई० [संख्या २०

श्री० साधु सीतारामदासजी को धर्म पत्नी

श्रीमती रामकुँवरि देवी का पत्र

सम्पादक महोदय!

इस सप्ताह मुझे श्री० साधुजी की गृहिणी का निम्न पत्र मिला है!

बिजोलिया
ता० ८—२२

पूज्यवर!

आज भगवान की कृपा से मुझे भी वह शुभ दिन मिला है जिस के लिये बहुत सी देश की बहिनें आसरा देखा करती हैं। पहले राजस्थानी बहिनें भगवान से यह प्रार्थना किया करती थीं कि हमारे पतियों को किसी लड़ाई में जस मिले और वे संग्राम में काम भले ही आजांय, पीठ नहीं दिखावें। आज दुर्भाग्य से राजस्थान के लिए वह दिन नहीं है। फिर भी हम यह इच्छा तो कर ही सकती हैं कि हमारे स्वामी जब किसी दुःख में पड़ें तो देश या धर्म के लिए पड़ें। मेरे स्वामी को यह दूसरी बार धर्म और देश के लिये जेल पधारने का अवसर मिला है। इस से बढ़ कर मेरे लिए खुशी का दिन कौन सा हो सकता है?

आपने मेरी खबरगीरी के वास्ते यहां के काम करने वालों को लिखा है। मेरा निवेदन है कि मेरे लिए आप कोई चिन्ता न करें। स्वामी के फिर छूट कर काम आरम्भ करने तक मुझ से जो कुछ बनेगा उन के छोड़े काम की पूर्ति के लिए करती रहूंगी और नियमित रूप से चरखा कातना और प्रचार का काम करूंगी।

मेरी सिर्फ एक ही इच्छा है और वह ये है कि भगवान उन से देश के लिए तकलीफ सहने और देश की सेवा करने की ज्यादा से ज्यादा शक्ति दे।

शुभैषिणी
राम कुँवरि साधु

इस पत्र पर टीका टिप्पणी की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। यदि इसी प्रकार सब राजस्थानी देवियां राजस्थान के गौरव और अपने कर्तव्य का ध्यान रखने लग जांय तो राजस्थान के उद्धार का दिन बहुत निकट आ जाय।

वी० एस० पथिक

मि० आर्थर ग्रिफ़िथ की मृत्यु

गत १२ अगस्त को आयर्लैंड की फ्रीस्टेट के पहिले अध्यक्ष मि० आर्थर ग्रिफिथ का देहान्त हो गया। आपने आयर्लैंड में भरसक शान्ति स्थापना का प्रयत्न किया और आयरिश स्वातन्त्र्य संग्राम में बहुत अधिक भाग लिया था। यह कहना चाहिये कि सिनफिन संगठन के जन्मदाता आप ही थे।

अजमेर में सनसनीदार मुकदमा

पुलिस चोरी में शामिल, इन्सपेक्टर अब्दुल जब्बार और फतहखां हिरासत में!

फकीरखां नाम के देवगढ़ के फकीर रुपधारी ठग के मुकद्दमे से पाठक परिचित हैं। हाल ही में इस संबंध में बहुत कुछ भंडा फोड़ हुआ है। ५-४ मास पूर्व जब अजमेर में फकीर के घर पर पुलिस का पहरा लगा हुआ था एवं घर के ताले पर पुलिस अफसर की सील लग रही थी, उस समय कतिपय पुलिस कर्मचारियों ने फकीर के भाई जुम्मन खां से मिल कर सील तोड़ ताला खोल कर रुपयों की भरी हुई दो संदूकें गायब करदीं। इस कुकृत्य में कई पुलिस कर्मचारी और फकीर की एक पाप पत्नि भी शरीक थी। अब शायद पर्याप्त भाग न मिलने के कारण जुम्मन खां और उपर्युक्त स्त्री फूट कर पुलिस से जा मिली और इस प्रकार यह रहस्योद्घाटन हुआ। अभी तक सीरोही राज्य को इस भंडा फोड़ के फल स्वरूप कुछ हजार रुपये मिले हैं और भी अधिक मिलने की सम्भावना है। सुना है कि अजमेर पुलिस के ऊंचे अफसर इन्सपेक्टर अब्दुल जब्बार तथा श्री० फतह खां आदि पर इसी संबंध में मुकद्दमा चलाया जा रहा। वे हिरासत में हैं और भी बड़े २ भयंकर भंडा फोड़ जिन की कभी आशा नहीं थी होंगे और सुना जाता है कि यह मामला पूरा रंग लायगा। कई अफसर और पुलिस कर्मचारी इस में फंसेंगे। आगामी सप्ताह तक इस विषय पर हम पूरा प्रकाश डाल सकेंगे।

लार्ड नार्थ क्लिफ का देहावसान

गत १४ अगस्त को लार्ड नार्थ क्लिफ "प्रेस के नेपोलियन" का देहान्त हो गया। मृत्यु समय आप के अधिकार में ६० समाचार पत्र और साप्ताहिक पत्र थे जिनका साप्ताहिक सरक्युलेशन करीब २५ लाख के था। इतने अधिकार सम्पन्न होते हुए भी आपने मनुष्यता की इतनी हानि पहुंचाई है जिसका स्पष्ट प्रमाण एशिया और यूरुप की वर्तमान श्रृंखलाबद्ध कमजोर अवस्था है। आपने भारत के लिये स्वराज्य का विरोध किया था और महात्मा गांधी की गिरिफ्तारी के लिये भी जोर दिया था। खिलाफत के प्रश्न और मुसलिम संसार की अशांति का मूल कारण आप ही को कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। इसी प्रकार बोल्शेविक रूस को बदनाम करने के लिये झूंठी बातें फैला कर अपनी शक्ति का काफ़ी दुरुपयोग किया। आप के कोई वारिस भी न रहा!

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

डाकू धर्म ।

गत महा युद्ध के बारे में अब भी बहुत से भोले भाले लोग यही विश्वास करते हैं कि यह संसार की स्वतंत्रता के लिए लड़ा गया था। इस का मूल कारण है यूरोपीय राष्ट्रों में प्रचलित डाकुओं की तरह कमज़ोर देशों को बांट खाने के लिए सदा से काम में लाई जाने वाली कूट नीति। सन् १९१७ के नवम्बर में ट्राटस्की ने कुछ गुप्त सन्धियों को पाकर प्रकाशित कराया था, परन्तु युद्ध सम्बन्धी परिस्थितियों के कारण वे मैंचेस्टर गार्डियन को छोड़ कर संसार के अन्य पत्रों में सब की सब प्रकाशित नहीं हो सकीं और यही कारण है कि अब भी संसार के अधिकांश मनुष्य इस सम्बन्ध में अंधकार में हैं। इन सन्धियों से प्रगट हो जाता है कि वास्तव में कुछ बड़े राष्ट्र डाकुओं ने यह चाहा था कि प्रबल २ राष्ट्रों को अपने गुट्ट में मिला, एक अदम्य डाकुओं का समूह बना संसार भर पर शासन किया जाय।

इन गुप्त सन्धियों में सब से महत्व पूर्ण रूस और इंग्लैण्ड की १ मार्च १९१५ की सन्धि है। इस के अनुसार कांस्टेंटिनोपल रूस को और फारस का स्वतंत्र भाग इंग्लैंड को मिलना तय हुआ और कांस्टेंटिनोपल के लिये ही रूस युद्ध में कूदा। फ्रांस और इटली को मिला कर डाकू दल बढ़ाने को २६ अप्रैल १९१५ को फिर एक सन्धि चारों की हुई। इस के अनुसार ट्रेंटिनो, दक्षिणी टाइरल, ट्रियेस्ट और उस के निकटवर्ती प्रदेश तथा एशिया माइनर में उत्तर डालमेशिया [illegible] जिला (कोयले की खान [illegible])—[illegible] टर्की का बटवारा हो—और अफ्रीका की रेगिस्तानी सीमा। १९१६ के बसन्त में फिर एक सन्धि टर्की के सम्बन्ध में हुई। इस के अनुसार इंग्लैण्ड को मैसोपोटामिया। फ्रांस को सीरिया, अनातोलिया और पश्चिमी कुर्दिस्तान, रूस को दक्षिणी कुर्दिस्तान, ट्रेबिज़ंड, [illegible] वगैरा और इटली को कदाचित अनातोलिया के सिवाय पूर्व निश्चयानुसार शायद स्मर्ना भी। इस से स्पष्ट हो जाता है कि मैसापोटामिया का मैनडेट अंग्रेज़ों ने कैसे लिया। असली सन्धि के अनुसार तेल के भाग इन्हें नहीं मिलते जो इन्होंने दूसरा प्रलोभन देकर फ्रांस से झड़ा लिये। इतना होने पर रूमानियां को गुट्ट में लेने का प्रयत्न हुआ और १८ अगस्त १९१६ को गुप्त सन्धि के अनुसार ट्रांसिलवानिया, बुकोविना आदि उसे मिलने तय हुए। इसके पहले १९१६ की जौलाई में रूस जापान में एक प्रगाढ़ सन्धि हुई जिस के साथ एक गुप्त अभिसंधि यह रक्खी गई कि चीन को दोनों में से किसी के भी विरुद्ध पड़ने वाली तीसरी शक्ति का उपनिवेश न बनने दिया जायगा। बीच लड़ाई में रूस खिसकने लगा तब ११ मार्च १९१७ को करेंस्की द्वारा की गई क्रांति के एक दिन पहले—रूस फ्रांस—गुप्त सन्धि हुई जिस के अनुसार फ्रांस को सार और वैली लोहे खानों सहित (अलसेस लोरेन के सिवाय) मिला और रूस को अपने पश्चिमी युद्ध क्षेत्र की ओर चाहे जितनी सीमा बढ़ा लेने की स्वतंत्रता मिल गई। किन्तु रूसी क्रांति ने उधर की स्कीम चौपट करदी।

इन प्रमाणों से स्पष्ट हो जाता है कि लड़ाई के पहले ही सब देशों का बटवारा कर लिया गया था। लड़ाई का उद्देश्य संसार को प्रजातंत्र के लिए सुरक्षित करना नहीं प्रत्युत कुछ डाकू साम्राज्यों के अधिकार में कर देना था और इसी नीच स्वार्थ के लिए सब मकज़ोर राष्ट्र पशुओं की तरह हलाल कर दिए गए।

ताज़ी बातें

आयर्लैंड के प्रजातंत्र वादियों ने अब अपना संगठन दृढ़ कर लिया है अब वे न केवल दृढ़ता से [illegible] रहे हैं प्रत्युत अपने खोए हुए स्थानों को [illegible] रहे हैं। हाल में २० ने डब्लिन के [illegible] पर धावा मारा और उसे [illegible] कर चलते बने। कार्क पर [illegible] सेनाओं का कब्ज़ा हो गया कहा जाता है। उधर १४ को प्रजातंत्र वादियों ने डुंडालक पर पुनः अधिकार कर वहां के सैनिकों को गिरफ्तार कर लिया है और पुलिस की बैरकों को तोड़ते हुए इनसीर और डोग्रेडा नामक स्थानों पर भी अधिकार कर लिया है। जिनेवा में राष्ट्र संघ के मैनडेट कमीशन की बैठक ११ को समाप्त हो गई। कमीशन ने कुछ प्रश्न ऐसे तयार किए हैं जिन से ब्रिटेन फ्रांस को रिपोर्ट तयार करने में सहायता मिले। हेग की अन्तर्राष्ट्रीय न्याय परिषद ने निर्णय किया है कि अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संगठन काम के घण्टे आदि निर्णय करने का अधिकारी है। फ्रांस और रूमानिया के जजों का मतभेद रहा जर्मनी हर्जाना देने से इन्कार कर ही रहा है। इस के लिये जो कमेटी बैठी थी, उस में फूट पड़ गई है। मि० गोल्डकेर चाहते थे कि [illegible] की खानों और जंगलों पर अधिकार कर लिया जाय और बैंकों का लेन देन बन्द कर दिया जाय मि० लायड जार्ज ने कहा कि इस से जर्मन मजदूर हड़ताल कर देंगे और नई कठिनाइयां पैदा होंगी। इस पर घोर मतभेद होगया। इटली के पर राष्ट्रीय मंत्री ने मतभेद मिटाने को प्रस्ताव किया कि छः या ८ सप्ताह के लिए कांफ्रेन्स स्थगित कर दी जाय। मि० लायड जार्ज तयार हो [illegible]

बल प्रयोग की उम्मेदवारी।

फ्रांस में वहां के कानून के अनुसार किसी समाचार पत्र प्रतिनिधि पर बिना पार्लियामेंट की आज्ञा मुकदमा नहीं चल सकता। कुछ महीने हुए "ल्हीमानिते" नामक साम्यवादी पत्र में जिस के संचालक मरसैल कैशिन हैं मि० पाउल वाइलीएट कौचुरियर का एक लेख निकला, जिस में लिखा था:—

"वाशिंगटन में मि० ब्रायंड ने स्वीकार किया है कि योरूप में फ्रांस की सेना सब मध्यम श्रेणी की है। इसी सेना में तुम नौकर रक्खे जाते हो। इस में वे तुम्हें अपने हाथों की [illegible] करने वाली कठपुतली बनने के उम्मेदवार बना कर रखते हैं। किन्तु तुम कठपुतली मत बनो। तुम्हारे हृदय पर जो (राजभक्ति आदि की) नैतिक शिक्षा दी जाती है उसे भूल जाओ और मतलब की सामग्री सब अपने पास रक्खो। युद्ध कला शस्त्रास्त्र व्यवहार, वायुयान कला अच्छी तरह सीखो और अच्छे बंब फेंकने वाले बनो। ये सब औजार मजदूरों के पैसे से बनाये खरीदे जाते हैं। तुम्हारा समाज तुम्हें खतरनाक हाथों में देता है किन्तु वह तुम पर विश्वास रखता है। तुम एक श्रमजीवी नौकर की भांति अपने शत्रु की नौकरी में हो किन्तु यदि तुम हड़ताल करो तो यह तुम्हारे पास एक हथियार है। तुम सशस्त्र हो और जिस दिन मध्यम श्रेणी तुम्हें अपने माता पिता भाइयों के विरुद्ध खड़े होने को चाहे युद्ध या भीतरी रक्षा की अपील करे तब तुम केवल हथियार ले लो। और यह इस लिये कि वे तुम्हारे समाज के हैं और सम्भव है उसे उन की आवश्यकता पड़े।"

इस लेख के इस अंश के लिए उक्त दोनों पर मुकद्दमा चलाने को २६ मई को पार्लियामेंट की आज्ञा मांगी गई। पहली जून को "ल्युमैनाइट" नाम के एक साम्यवादी दैनिक ने उक्त लेख को पूरा ज्यों का त्यों छापा। शीर्षक था "बल प्रयोग की उम्मेदवारी"। इस बार उस पर केवल वाइलीएट कौचुरियर के ही नहीं १५ काम्युनिस्ट प्रतिनिधियों, ३२ उक्त पार्टी की कार्य कारिणी के सदस्यों, ६ काम्युनिस्ट युवक संगठन की नेशनल कमेटी के सदस्यों, ४ पार्टी की पेरिस के संगठन के पदाधिकारियों, १२ कम्युनिस्ट म्युनिसिपल कौंसिलरों, २० पेरिस के कम्युनिस्ट मेयर्स mayors, और १२ दी रिपब्लिकन एसोसिएशन आफ एक्स सर्विस मैन" की सेण्ट्रल कमेटी के सदस्यों के हस्ताक्षर थे।

(१९ जून के लेबर मंथली से)

इस विवरण और लेख से जाना जा सकता है कि योरोप में पत्रों को कहां तक लिखने की स्वतंत्रता है और वे उस की कैसे रक्षा करते हैं।

किन्तु पाइन्केर बिलकुल इन्कार होगये। उधर फ्रांस के अधिकारियों ने जर्मनी के [illegible] अदायगी अन्तिम फैसले तक रोकनी स्वीकार कर ली है।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

कृष्ण जन्म

(लेखक एक भंगभक्त)

जन्माष्टमी के दिन न जाने किस ने मुझे [illegible] देने को कह दिया । नहीं मैं भूख का कष्ट कम होगा और व्रत भंग न होगा । इसी विचार से मैं पीने पर [illegible] हो गया था । परन्तु [illegible] क्या थी, [illegible] छेड़खानी और मस्ती के बाज़ार में पहुंच गया । मैं तो पागल था ही [illegible] लगा तो सारी प्रकृति को [illegible] ।

कृष्ण ने अपने कोमल पैरों को [illegible] फेंका कर [illegible] । [illegible] जिस के लिये [illegible] था किन्तु [illegible] पड़े हो [illegible] में खड़े हुए [illegible] [illegible] के [illegible] और हंसते २ [illegible] पर का [illegible] लेने लगे । सारे [illegible] में सब ही [illegible] हो गए । [illegible] के बाद खड़े हो गए । किन्तु [illegible] को [illegible] ने दूसरे ही क्षण उस [illegible] को काफूर कर दिया । कृष्ण ने बच्चों को गोद में उठा कर प्यार से चूम लिया । बच्चे और भी खिलखिला कर हंस पड़े । [illegible] हंसी से खिल कर [illegible] गया ।

द्वार की सख्त कुल्हाड़ी [illegible] अशोक के गले में [illegible] खड़ी थी । अशोक [illegible] के [illegible] अपने आंखें [illegible] था कि [illegible] का इनाम मांगेगा । [illegible] और छिपे थे । [illegible] का [illegible] प्रगट करने को [illegible] से संकेत कर जाते हुए [illegible] को बुला लिया । अशोक लाल हो उठा । कुछ कहने को था किन्तु पास खड़े [illegible] को अपनी ओर देखते देख चुप हो गया । [illegible] ने उस का [illegible] कर दिया । किन्तु [illegible] ने [illegible] का इलाज कर दिया ।

[illegible] वाला मुंह धोकर बैठी थी । पास [illegible] हुई [illegible] मैया देवी ने उन के मुंह से अपना मुंह सटा दिया । बकुल का सारा मुंह पीला हो गया । इसी समय रजनी गंगा ने इस ओर मुंह फेरा, [illegible] [illegible] लड़का है ! लड़का है !! सारे [illegible] हंसते २ लोट पोट हो गए । [illegible] का तो हंसते २ मुंह सूज गया !

[illegible] के [illegible] और पुरोहित [illegible] यहां भी अपना काम कर रहे थे । [illegible] किसी की लड़का तलाश कर देते थे किसी की लड़की । अधिक [illegible] मिलने से [illegible] ठाकुर [illegible] के [illegible] सौन्दर्यमयी कन्या [illegible] लिया । विवाह होने पर [illegible] पता चला किन्तु अब होने से क्या होता था । ये जिस के [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] हैं ।

[illegible] के [illegible] दिखलाई [illegible] आंखें [illegible] । ऐसा [illegible] की [illegible] है । [illegible] [illegible] पढ़ने लगे । [illegible] ने [illegible] [illegible] जैसे [illegible] आप सब [illegible] हैं । उत्तर मिला तुम्हें पता नहीं, आज कृष्ण भगवान का जन्म होने वाला है । मैंने कहा कहां, मथुरा में ? उत्तर मिला नहीं, सारे भारतवर्ष में, प्रत्येक नगर में, प्रत्येक ग्राम में, प्रत्येक गृह में और प्रत्येक हृदय में ! मैं गद्गद हो गया ! [illegible] पूरी होने वाली है ! [illegible] सब में [illegible] है ।

[illegible] के [illegible] [illegible] हो उठी ! वह [illegible] वह [illegible] वह कंस [illegible] वह मथुरा, वह महाभारत, वह गीता और वह समर भूमि--एक के पश्चात् एक सारा नाटक आंखों के सामने फिरने लगा !

मैं सोचने लगा, कृष्ण जन्म होना ही चाहिए । आज का समय उस समय से किस बात में कम है ? कंस छोटे २ लड़कों को नदी में डुबा कर मरवा डालता था । आज भी १४ वर्ष तक के आज़ाद [illegible] बच्चों पर मुकदमें चलाए जाते हैं—जेल [illegible] जाती हैं, जलियां वाले बाग [illegible] गोलियों से भून डाले जाते हैं, [illegible] बेइज़्ज़त की जाती हैं । रियासतों में [illegible] और [illegible] की प्रतिज्ञाएं इस लिये [illegible] की जाती हैं कि वे आराम [illegible] दे दें, [illegible] की जाती है कि वे [illegible] हैं—[illegible] हैं—उन को [illegible] में [illegible] नहीं ! कंस लोगों से [illegible] कर लेता था—[illegible] प्रत्येक जागीरदार, ज़मींदार, ताल्लुकदार और रईस कंस से [illegible] करते हैं । सरकार [illegible] सारे देश का घर [illegible] ले जाती है लाखों [illegible] जाती हैं । सिरोही जैसी रियासतों में जनता अपने कष्टों को दूर करने को [illegible] करती है तो उसके घर, गांव [illegible] कर दिये जाते हैं, शत्रुओं का [illegible] उस पर हमला कर दिया जाता है [illegible] बच्चों तक के [illegible] लगती है ! कौन सा कष्ट है जो आज देश में नहीं, कौन सा राक्षसी व्यवहार है जो इस देश वालों के साथ न किया जाता हो ?

\+ + + + + +

सहसा सुरीले बाजों के शब्द से कान भर गए । जय २ कार से आकाश [illegible] उठा । शंख घड़ियाल और नगारों ने इस गूंज को सप्तम पर पहुंचा दिया । किन्तु [illegible] होता है [illegible] उनका [illegible] नहीं पहुंची । [illegible] को [illegible] चारों ओर [illegible] आनन्द की [illegible] निकली । ऐसा प्रतीत होता था कि आनन्द और [illegible] का [illegible] है । किन्तु यह कहना कठिन था कि यह आनन्द कृष्ण जन्म हो जाने के कारण था या [illegible] कारण, [illegible] [illegible] उपस्थित होने के कारण । [illegible] और अतृप्त भाव से [illegible] की प्रतीक्षा कर

रहे थे उसे देख कर यह कहना कठिन है कि उस के मूल में भक्ति का प्राबल्य था या क्षुधा का। हां, सच्चे आनन्द की छटा यदि किसी में दिखाई देती थी तो उन पुष्पों में जो कृष्ण के चरणों में चारों ओर से अर्पित किए गए थे।

× ÷ ÷ + × ÷

मैं सोचने लगा कि इस नाटक से लाभ क्या? क्या हम वास्तव में इस योग्य हैं कि प्रत्येक घर में, प्रत्येक हृदय में कृष्ण का आह्वान कर सकें। कृष्ण महान थे, अवतार थे, किन्तु फिर भी वे गोपों में गोप— उन के समान— उन के अपने हो कर रहे। क्या हम उस प्रकार अपने बड़प्पन के अस्तित्व को समष्टि में मिटाने को—पतितों को सहोदर बनाने को तयार हैं? सांसारिक नियमों के अनुसार कंस के सन्मुख उनकी शक्ति तुच्छ थी — वे निर्बल थे, फिर भी जब देश और धर्म के लिये आवश्यकता आपड़ी तब वे बिना अपने बल का अन्दाजा लगाए, हारने जीतने की परवा किये भिड़ गए और प्रकृति के नियम की रक्षा की। प्रकृति को नियम ही ऐसा है। चींटे के लिए मनुष्य उतना ही सबल है जितना व्यक्ति के लिये साम्राज्य। किन्तु अनुचित रूप से छेड़ जाते ही चींटा मुरदा उसे बिना बलाबल, हानि लाभ की चिन्ता किए काट खाता है—स्वयं कुट जाता है किन्तु [illegible] स्थान को नहीं छोड़ता। मधुमक्षिका उससे भी छोटी होती है किन्तु [illegible] मनुष्य ने धुआं कर के उसपर अन्याय किया कि उसे एक मिनट भी वश में रखना कठिन हो जाता है! क्या हम में प्रकृति के इस नियम के पालन की-अन्याय के [illegible] करने की आज्ञानुसार "सुख दुःखेसमे कृत्वा लाभा लाभौ जया जयौ। ततो युद्धाय युज्यस्व" का पाठ करने की शक्ति है? अन्त में कृष्ण विजयी हुए कंस का उन्होंने अत्याचारों सहित नाश कर दिया। सारी जनता उन के हाथ में थी। सब उन्हें सिंहासन पर देखना चाहते थे, किन्तु कृष्ण ने अपने सारे परिश्रम और कष्ट सहन का फल— राज मुकुट उग्रसेन के सिर पर रख दिया। स्वयं अवनत मुख भक्ति सहित कृष्ण के चरणों की ओर देखने लगा। कंस विरोधी नहीं उनको माना था, किन्तु उन्होंने उस के या उस के अन्यायों के प्रति पक्षपात से दुर्लक्ष्य करने की कभी कल्पना भी नहीं की! प्रति वर्ष कृष्ण का अपने घरों और हृदयों में

कुछ सामयिक प्रश्न!

श्री० मणिलाल भाई कोठारी की गिरिफ्तारी की खबर इधर कई पत्रों में प्रकाशित हो चुकी है। परन्तु वास्तव में वे गिरिफ्तार नहीं हुए। हां, कुछ कर्मचारियों द्वारा छेड़े जरूर गए हैं। वे इधर गुजरात विद्यापीठ के लिए चन्दा एकत्र करने गए थे।

जन्म कराने वाले अपने हृदय को टटोल कर बतावें कि उनमें उस त्याग और महत्ता का शतांश भी मौजूद है क्या?

+ + × ×

यदि नहीं तो इस नाटक से लाभ? आवश्यकता है नाटक के पहले, अपने यहां कृष्ण आगमन को प्रगट करने का प्रयत्न करने के पूर्व अपने हृदय को, घर को, ग्राम को, नगर को, प्रदेश को, प्रान्त को और देश को वैसा बना लेने की जिसमें कृष्ण अवतरित हो सकें, और हम सच्ची जन्माष्टमी मना सकें। यह सत्य है कि आज कृष्ण नहीं हैं, किन्तु उनका वृन्दावन है, गोकुल है, यमुना है, गोवर्द्धन है, महाभारत है, उन की पुण्यस्मृति है और है उनकी गीता। इन सबसे अपने हृदय को सजाइए, उसमें वह आग प्रज्वलित कीजिए, वह ज्योति जगाइए कि सब कमजोरियां भस्मीभूत हो जांय। निश्चय कर लीजिए कि आप कृष्ण को अपने यहां अवतरित कर के विश्राम लेंगे। इस कर्मयोग के सुख से संसार को भर देंगे, संसार को इस सुख के सागर में तरायेंगे, एक छोर से दूसरे छोर तक इस सुख की तरंगें चलाएंगे, इस सिरे से उस सिरे तक इसी गम्भीर ध्वनि से संसार को भर देंगे।

यश, वैभव, सुख की चाह नहीं;
परवाह नहीं जीवन न रहे।
यदि इच्छा है, यह है जग में
स्वेच्छाचार दमन न रहे!!

इन्हीं विचार तरंगों में बहा चला जा रहा था कि एक विद्यार्थी ने आवाज़ दी; उठिए! एकादशी हो गई! आंखें खोल कर मैंने देखा कि [illegible] सामुच सब मन्दिरों में [illegible] रहे हैं। उत्सव हो चुका, लोग पंचामृत पंजीरी ले व्रत पारण की जल्दी कर रहे हैं।

पहले तो वे कार्य करने से [illegible] रोके गए, फिर भीतर आने दिए गए और उस के साथ ही सब सरकारी अधिकारियों और नगर निवासियों को कहला दिया गया कि न कोई उन्हें गांवों में घुसने दे [illegible]। वास्तव में श्री० मणिलालजी ने [illegible] की। यदि उन्हें चन्दा एकत्र करने दिया जाता तो सरकार [illegible] कर जाता था। क्योंकि हमारे रईस सरकारों का हुक्म मानने के आदी हैं, भाइयों की सेवा करने के नहीं।

श्री० चौथमलजी, माधूजी और [illegible] के साथ कुम्भलगढ़ के नायब हाकिम ने जो व्यवहार किया है, वह अन्यत्र प्रकाशित रिपोर्ट से पाठकों को मालूम होगा। संघ के कार्यकर्ताओं को अच्छे व्यवहार की आशा या इच्छा भी न थी और न वे इसे कोई कष्ट ही समझते हैं। क्योंकि वे इससे कहीं अधिक अपमान और कष्टों के लिए पहले तयार रहते हैं, परन्तु मनुष्यत्व के साधारण नियमों की भी दुरभिमानी अधिकारियों ने जो उपेक्षा की है उसने चारों ओर असन्तोष फैला दिया है। जिनका व्यवहार राजनैतिक अभियुक्तों के साथ इस प्रकार का रहा उनका सर्व साधारण के साथ क्या व्यवहार होगा यह सरलता से अनुमान किया जा सकता है। अतः लोगों का पहले भी राज्य के व्यवहारों और अन्यायों की शिकायत थी इस समय कार्यकर्ताओं के साथ जान बूझ कर किये गये दुर्व्यवहार ने उन्हें और भी असन्तुष्ट कर दिया है। गिरफ्तारी के बाद [illegible] ने अपनी टेढ़ी चाल नहीं छोड़ी है। अतएव फिर उदयपुर के भीलों को लवारिवार [illegible] कर दिया है। इधर पंचायतों की संयुक्त कमेटी ने निर्णय दे दिया है कि सालसे के अधिकारियों के इन एवं अन्य अन्यायों के विरुद्ध सार्वजनिक सत्याग्रह होना चाहिये। हम श्री० बिन्दूलालजी और उदयपुर के उच्चाधिकारियों को अपनी सलाह [illegible] सुधार करने की सलाह देते हैं अन्यथा सम्भव है फिर गर्वे के कारण [illegible] भी मुश्किल से शान्ति और प्रेम प्राप्त न किया जा सके।

श्री० चौथमलजी, माधूजी और प्रेमचन्दजी को उदयपुर में किले पर एक अच्छे स्थान में कैद रक्खे गए हैं। अन्य सब बातों की उन्हें सुविधा है किन्तु पानी जो पीने को मिलता है, बिलकुल गदला और खराब है। इससे प्रायः सबका स्वास्थ्य बिगड़ने लग गया है। शिकायत हाकिम बिन्दुलालजी तक की जा चुकी थी और हमें आशा है कि इस का समुचित प्रबन्ध हो गया होगा।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

नवीन राजस्थान

भाद्रपद कृष्णा १२ रविवार संवत् १९७९

हिंदू मुस्लिम ऐक्य और गोरक्षा

हिन्दू और मुसलमानों की धार्मिक अन्ध कट्टरता से अब तक चालाक लोगों ने काफ़ी फ़ायदा उठाया है और अब भी उठाते हैं। इस में सन्देह नहीं कि अब हिन्दू मुसलमान भी इस मसले को बहुत कुछ समझ गये हैं। हिन्दू भी समझ गये हैं कि आखिर गाय गाय है और मनुष्य मनुष्य! एक गाय के लिये मनुष्यों के प्राण लेने पर उतारू हो जाना और वह भी उस अवस्था में जब वह, यह कार्य उसी धार्मिक विश्वास के कारण कर रहा हो, जिस से प्रेरित हो कर वे इतने गरम हो जाते हैं, अनुचित है। दूसरी ओर मुसलमान भी समझ गये हैं कि यदि एक धार्मिक कृत्य से हमारे दिन रात के साथियों को दुःख पहुंचता है और उस के फल स्वरूप उन्हें [illegible] पड़ती है और देश भर के हित को हानि पहुंचा देता है, तो ऐसे महंगे सवाब से अलग रह कर भी वे खुदा को राज़ी रख सकते हैं। इसी विचार और खयाल से प्रेरित हो कर अमीर काबुल से लगा कर बड़े से बड़े उलेमाओं और विद्वान मुसलमानों ने इस विषय पर फ़तवे दिए हैं। परन्तु फिर भी यह समझदारों तक ही महदूद है। अब भी हिन्दुओं और मुसलमानों में ऐसे कट्टर धर्मान्धों की कमी नहीं है जो कितनी ही महंगी पड़ने पर भी ऐसी प्रथा का पालन अनिवार्य मानते हैं। मुसलमान भाइयों में [illegible] में कुछ पढ़े लिखे और समझदार [illegible] लोग भी मिल जायेंगे। इस के मूल कारण दो हैं, प्रथम तो मुसलमान भाइयों का राजनैतिक शिक्षा में पिछड़े हुए होना और दूसरा है कुछ मुसलमान अगुआओं का जान बूझ कर लोगों के इस भाव को उन के हृदय से निकालने का प्रयत्न न करना। तीसरा एक और भी कारण है और वह सब से प्रबल है। वह है सभी हिन्दु मुसलमानों का "हिन्दु मुस्लिम ऐक्य" की वास्तविकता को न समझना। बहुत से मुसलमान भाई यह समझते हैं कि खिलाफ़त आन्दोलन में हिन्दुओं को साथ मिलाये रखने के लिये उलेमाओं और अमीर ने फ़तवे दे दिये हैं। बहुत से हिन्दू समझ रहे हैं कि मुसलमानों को स्वराज्यान्दोलन में साथ रखने के लिये उन के साथ प्रेम बढ़ाया और दिखाया जा रहा है। वे नहीं जानते कि हिन्दू मुस्लिम ऐक्य तेतीस करोड़ भारतीयों की आज़ादी, शांति और जान माल की रक्षा का प्रश्न है। हिन्दु और मुसलमान दोनों ही दलों को भारत में रहना है और सदा रहना है। एक घर में रह कर सदा दुश्मनी और मतभेद रख कर काम नहीं चल सकता। एक ही बात हो सकती है या तो दोनों में से एक का अस्तित्व न रहे या दोनों मिल कर रहें—दोनों अपने को इतने सहिष्णु बनाएं कि मिल कर रह सकें, अन्यथा उन का सदैव तीसरी शक्ति के फन्दे में पड़े रहना अनिवार्य है। इस में पहली बात असम्भव है अतः दूसरी ही बात है जिस के लिये प्रयत्न करना प्रत्येक बुद्धिमान का कर्तव्य है। अस्तु:

कुछ समय से यह भी कहिए कि जब से असहयोग कुछ शिथिल हुआ है, गोरक्षा और गोवध का प्रश्न फिर देश के कोनों में छिड़ा है। छेड़ने वालों में दो तरह के लोग हैं। एक तो वे हैं जो हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के तत्व को नहीं समझते और जो असहयोग आन्दोलन को शिथिल होता देख कर—यदि मुसलमान हैं तो यह समझ रहे हैं कि अब हिन्दुओं की दिलदारी रखने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि उनकी जो शक्ति हमारे कार्य में लग रही थी वह शिथिल हो गई या यदि वे हिन्दू हैं तो यह समझ रहे हैं कि मुसलमान हमारे प्रेम का पूरा बदला नहीं देते, और यह कि ज्यों ही उनका काम निकल चुका कि वे ज्यों के त्यों हो जायेंगे। दूसरे वे लोग हैं जो हमेशा हिन्दू मुसलमानों की इन कमज़ोरियों से फ़ायदा उठाने की ताक में रहते हैं। ये दोनों दल एक ओर भोले हिन्दुओं को गोरक्षा का आंदोलन प्रबल बनाने और गोवध सरकार द्वारा कानूनन रुकवाने के लिये चारों ओर से आवाज़ उठाने को उत्साहित कर रहे हैं और दूसरी ओर मुसलमानों को इसका विरोध करने को उत्तेजित करते हैं और उनसे कहलाते हैं कि यदि कानूनन गोवध बन्द किया गया तो "[illegible]" हमारा फ़र्ज़ हो जायगा।

इधर हिन्दुओं के लिए स्वधर्मानुसार गोरक्षा का प्रश्न सबसे अधिक महत्व का—उतने ही महत्व का है जितना मुसलमानों के लिये खिलाफ़त का। फिर भी देशके प्रति अपने कर्तव्य का ध्यान रखते हुए समझदार हिन्दू बराबर सर्व साधारण को उक्त निश्चय से हटाने का प्रयत्न कर रहे हैं, परन्तु प्रश्नों की जटिलता उन्हें पूर्ण सफल नहीं होने देती। यदि धार्मिक प्रश्न को एक ओर रख दिया जाय तो आर्थिक दृष्टि से भी गोरक्षा का प्रश्न कम महत्व का नहीं रह जाता। [illegible] इस देश का जीवन है और यहां कृषि के कष्ट या पंजिन जो कुछ हैं वो बैल ही हैं। घी दूध का प्रश्न भी गोवंश के साथ बंधा हुआ है। मुसलमान भाइयों की दलील इतनी प्रबल नहीं कि वह मुसलमानेतर लोगों को भी सन्तुष्ट कर सके! यह कहना कि सरकार से असहयोग या मुकाबिला और अदावत होने के कारण जिस काम को वह कानूनन रोके, उसके विरुद्धाचरण करना उनका फ़र्ज़ हो जाता है, या तो एक मज़ाक है या बहाना। क्या यदि सरकार नमाज़ पढ़ने को कानूनन जायज़ ठहरा दे तो नमाज़ पढ़ना छोड़ दिया जायगा? क्या यदि किसी ऐसे जीव का मारना सरकार जुर्म करार दे दे जिसे मुसलमान भाई मारना गुनाह समझते हों, तो वे उसे मारने लग जायेंगे? या इसी प्रकार के अन्य विहित और अनिवार्य कार्य बंद कर दिए जायेंगे? इस समय भी अनेकों कार्य अंग्रेज़ों के कानून के अनुसार क्यों किए जा रहे हैं? यदि यह कहा जाय कि कोई राजनैतिक कोई धार्मिक दृष्टि से विहित हैं तो इसे मानते बड़े २ धर्मयाजक उलेमा और विद्वान मुसलमान विहित कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त उनकी धर्माज्ञाओं के अनुसार गाय की कुर्बानी उनके यहां अनिवार्य नहीं! उलटा निषेध ही मिलेगा देखिये सूरह हज कुरान शरीफ़ की ३६वीं आयत। यही नहीं यहां तक लिखा है कि "ज़ावेह उलबकर, क़ाते उलशजर, दायमुल ख़मर।" इसके अनुसार गो की कुरबानी करनेवाला अक्षम्य है। ये सब कारण ऐसे हैं जिनकी वजह से असहयोगियों के लिये उन समझदार हिन्दुओं को भी समझाना कठिन हो जाता है, जो असहयोगी नहीं हैं और जिनकी संख्या सर्वसाधारण को मिलाकर बहुत अधिक है। सिवाय असहयोग के हमारे पास कोई कारण उन्हें रोकने का नहीं रह जाता और उस में उनको विश्वास नहीं। मनचले मित्र कह सकते हैं कि उनका बहिष्कार या अन्य प्रकार प्रतिकार किया जाय, किन्तु प्रश्न

यह है कि इस से भी उद्देश सिद्धि होगी क्या ? उन के प्रयत्न का जो परिणाम होगा उस के सम्मुख केवल असहयोगियों का यह प्रयत्न ही "हिन्दू मुस्लिम ऐक्य" की रक्षा कर सकेगा—साधारण मुसलमानों को स्थिर रख सकेगा क्या ? ऐसी अवस्था में इस प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक देश के कार्यकर्ताओं का ध्यान जाना चाहिए। अभी तक जिन पत्रों में देखी है, केवल असहयोग के नाम पर रुकने की अपील देखी है, किन्तु यह अपील ही उक्त प्रवाह को रोक सके, यह दुष्कर प्रतीत होता है। क्योंकि मुकाबिले में दूसरे पक्ष का भी प्रबल युक्ति युक्त ढंग से जारी है।

हमारी राय में इस का एक ही इलाज हो सकता है। वह यह कि सहयोगी गौ रक्षा के आन्दोलकों को अपने प्रयत्न से रोक, न जा कर देश के अग्रणी उन से ये अपील करें कि यदि उन्हें करना ही है तो वे सरकार से धार्मिक प्रश्नों के अतिरिक्त किसी भी रूप में गोवध न होने का कानून बनवावें एवं धार्मिक कुर्बानियों को रोकने का काम अपने मुसलमान भाइयों के हाथ में सौंप दें। वास्तव में देखा जाय तो गौ वंश की सब से अधिक हानि कुर्बानी से न होकर गोरों के उदर से होती है। कुर्बानी का तो प्रश्न साल में एक दिन खड़ा होता है किन्तु यह प्रश्न नित्य प्रति का है। हमारा विश्वास है कि यह अपील दोनों ही ओर टाली नहीं जायगी।

इस के साथ ही इस प्रकार का [illegible] खड़ी करने वाले—चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान—[illegible] को [illegible] के अन्य कामों में पड़ने के पहले हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के रहस्य को जान लेना चाहिए। यह ऐक्य देश की [illegible] धरोहर है। स्वतंत्र [illegible] भी आप को इस धरोहर की आवश्यकता रहेगी। हम उन लोगों से सहमत नहीं जो हिन्दू समाज की कमज़ोरी [illegible] किया करते हैं। हिन्दू मुसलमानों से [illegible] हैं और उनमें भी केवल [illegible] समाज को छोड़ कर प्रायः सब सैनिक हैं। ऐसी अवस्था में कमज़ोरी का [illegible] एक बहाना के अतिरिक्त कुछ नहीं। फिर हम भी इस ऐक्य को बनाना [illegible] करना [illegible] समझते हैं। हिन्दू मुसलमानों के द्वेष का अर्थ है देश भर में [illegible] अशांति और तीसरों का लाभ एवं इस प्रकार देश भर की कुर्बानी। मुसलमानों को सोचना चाहिए कि जिस पवित्र दिन पर-

वरदिगार की प्रसन्नता करने के लिए हज़रत इब्राहीम ने अपने बेटे की कुरबानी की थी, उस दिन उसी खुदा की खलकत के एक बड़े हिस्से और अपने मज़हब की आज़ादी और सुलह व मिहृत को बचाने के लिए अपनी जिद की भी कुर्बानी न करना कितना बड़ा अज़ाब है ? साथ ही हिन्दुओं को भी सोचना चाहिए कि जब वे स्वयं अपने धार्मिक मामलों में राजकीय हस्तक्षेप पसन्द नहीं करते तो अपने दूसरे भाइयों के लिए उनका ऐसा करना कहां तक उचित है ?

सम्पादकीयटिप्पणियां

गत ४ अगस्त को हाउस आफ कामंस में जो बहस हुई है उस से साफ़ यह स्पष्ट हो गया है कि मि० लायड जार्ज यूनान के कामों को उचित समझते हैं। आप ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि बिना वहाँ रहने वाले ईसाइयों की रक्षा की गारंटी किए यूनानियों का स्मर्ना खाली न करना बिल्कुल उचित था और चाहे जो हो हम [illegible] एशिया के ईसाइयों को सुरक्षित रखना है। इधर शताब्जा नामक स्थान पर मित्रराष्ट्रों की सेनाएं एकत्र हो रही हैं और उन के तथा यूनानी सेनाओं के बीच का यह पौने चार मील का क्षेत्र निर्पेक्ष मान लिया गया है। क्या कहीं डकैती होगी !

अंग्रेज मंत्री लायड जार्ज की वक्तृता की खास २ बातों को हम गतांक में उद्धृत कर चुके हैं। इस अंक में उस का कुछ भाग और देने का विचार था, परन्तु इस लिए नहीं दिया कि प्रायः ध्यान देने योग्य बातें प्रकाशित की जा चुकी हैं। मि० लायड जार्ज की इस वक्तृता ने इस देश और इंगलैण्ड में हलचल मचा दी है। इसे दो भागों में बांटा जा सकता है। पहले भाग में आपने [illegible] सुधारों और उन के [illegible] के स्वरूप को भारतीय [illegible] [illegible] किया है और यह बतलाते हुए कि निकट परिस्थिति आगे [illegible] आप ने प्रायः स्पष्ट कह दिया है कि यदि भारत ने अधिक अधिकार मांगे तो मौजूदा भी छिन जांयगे। दूसरे भाग में सिविलियनों के गीत गाए हैं और उनके वेतन तथा साम्राज्य के भीतर स्वराज्य

की आवश्यकता सिद्ध की है मौजूदा सुधारों को माडरेट भी अपर्याप्त कहने आ रहे हैं, किन्तु वे उन्हें बिना [illegible] लाते, अतः शायद [illegible] देख कर वे उन्हें पर्याप्त बताने लग जांय। रही जनता, वह अधिक मांगे और [illegible] बिना रहेगी नहीं। ऐसी अवस्था में [illegible] बातें होंगी। या तो मि० लायडजार्ज को अपना हठ छोड़ना पड़ेगा या फिर भारत आयर्लैण्ड बनेगा। क्योंकि आयर्लैण्ड के लिए भी पहले मि० लायडजार्ज ने इसी प्रकार की बातें कही थीं। पीछे वे झुके और बेतरह झुके, किन्तु साथ ही इस में भी संदेह नहीं कि वे उस आयर्लैण्ड के सम्मुख नहीं झुके जिस के सामने अकड़े थे। जिस के सामने झुके वह कायापलट हुआ दूसरा ही आयर्लैण्ड था।

हाल में कलकत्ता कारपोरेशन की एक बैठक में स्त्रियों के मताधिकार पर मज़ेदार बहस रही। अन्त में यह बहुमत से स्वीकार हो गया कि स्त्रियों को मताधिकार रहे। क्या बंगाल कौंसिल भी इसका अनुसरण करेगी ?

कलकत्ते की भारतीय पत्र संचालक—सभा ने अपनी बैठक में कई प्रस्ताव पास किए हैं। उन में एक यह भी है कि पत्रों में किसी सरकारी कर्मचारी के सार्वजनिक कर्तव्यों पर कुछ बात निकले तो सरकार को चाहिए कि उस विषय की पूरी जांच कर एक कम्यूनिक सम्पादक के पास भेज दे। इसे यदि सम्पादक छापे तो उस पर मुकद्दमा न चलाया जाय। हमारी राय में इस के लिए यह नियम बनना चाहिए कि जिस पर आक्षेप किया गया हो वह स्वयं उसका खण्डन लिख सरकार को भेजे और सब सरकार उस की जांच कर यदि खण्डन ठीक हो तो पत्र को प्रकाशनार्थ भेज दे और यदि बनावटी हो तो कर्मचारी का दमन दे। किन्तु प्रश्न यह है कि नौकरशाही की स्वभाव में निष्पक्षता की इतनी मात्रा है क्या ?

श्री० देशबन्धु दास के विचार

देशबन्धु दास ने समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों से भेंट करते समय कहा है कि मेरे साथ जेल में बहुत अच्छी तरह व्यवहार किया गया। राजनैतिक अवस्था के बारे में विशेष अध्ययन करने के पश्चात् अपनी राय प्रकट करने की आपने इच्छा प्रकट की। साथ ही फिर से बैरिस्टरी

इंदौर राज्य पर एक दृष्टि।

(डि०-सुखसम्पतिराय भण्डारी)

(गतांक से आगे)

देश निकाले

मुझे यह बात बड़े खेद के साथ कहनी पड़ती है कि इन्दौर से कुछ लोगों को इस प्रकार से देश निकाले हुए हैं, जिन का समर्थन न्यायोचित रीति से कदापि नहीं किया जा सकता। अभी हाल ही में इन्दौर से बाबू [illegible]जमल जैन, डाक्टर [illegible] और मि० भानुदास शाह को चौबीस घंटे के अन्दर अन्दर इन्दौर राज्य से निकल जाने का हुक्म हुआ था। इन लोगों पर, मैंने जहां तक सुना है असहयोग आन्दोलन करने का आरोप रखा गया था। मैं इन तीनों सज्जनों को जानता हूं और मुझे अच्छी तरह से मालूम है कि ये इन्दौर में असहयोग आन्दोलन करने के खिलाफ थे। कांग्रेस का भी यह उद्देश है कि [illegible] स्वदेशी प्रचार, मद्यपान निषेध के अतिरिक्त असहयोग का अन्य कार्य क्रम देशी रियासतों में न चलाया जावे। मैं समझता हूं कि इन दोनों कार्यों को कोई भी राज्य न्यायोचित रीति से नहीं रोक सकता। मेरा ख्याल है कि इन्दौर के महाराजा इतने अनुदार नहीं हैं कि वे इन धार्मिक और सामाजिक सुधार के कार्यों को अपनी रियासत में रोकें। अगर स्वदेशी प्रचार आदि के कार्य के नाम पर इन सज्जनों ने कुछ कार्य किया हो तो उन्होंने ऐसा कोई कार्य नहीं किया, जिस पर रियासत एतराज कर सके। अतिरिक्त स्वदेशी प्रचार, मद्यपान निषेध का कार्य इन्दौर में कुछ अन्य सज्जनों ने और भी अधिक उत्साह के साथ किया था। ऐसी हालत में मैं नहीं समझता कि इन तीनों सज्जनों ही को चीफ मिनिस्टर ने क्यों देश निकाले की सज़ा दी? असहयोग के नाम पर इन सज्जनों को जिन का असहयोग आन्दोलन के साथ कोई आवश्यक सम्बन्ध नहीं था, सजा देना सरासर अन्याय था। मैं इन्दौर राज्य के एक नागरिक की हैसियत से चीफ मिनिस्टर से यह पूछने का अधिकार रखता हूं कि वे उन आरोपों को, उन कार्यों को प्रकट करें, जिन के बल पर उन्होंने इन्हें देश निकाला दिया। दूसरी बात यह कही जाती है कि इन सज्जनों ने इन्दौर राज्य प्रजा परिषद में हिस्सा लिया था, और ये इन्दौर में शासन सुधार के लिए आन्दोलन करते थे, अतएव इन्हें देश निकाले की सजा हुई। अगर इस बात में कुछ भी सत्य का अंश है तो मैं चीफ मिनिस्टर के इस कार्य को नितान्त [illegible] और अन्याय पूर्ण कहूंगा। मैं पहले भी लिख चुका हूं और अब भी बड़े ज़ोर के साथ लिखता हूं कि हर एक जनता को यह जन्मसिद्ध अधिकार है कि जिस राज्य में वह रहता है, या जिस राज्य की वह [illegible] है, उस के शासन में रही हुई बुराइयों के खिलाफ वह आवाज उठावे। न्याय की रीति से कोई राजसत्ता इस अधिकार को नहीं छीन सकती। अगर कोई शासन सुधार के लिये कोई परिषद कायम करता है या उस में योग देता है तो इस में कोई पाप नहीं, कोई अपराध नहीं। [illegible] इन्दौर राज्य की प्रजा परिषद के लिये मेरा उत्साह [illegible] नहीं। मुझे यह कहते हुए दुःख होता है कि उस में इन्दौर के एक समुदाय विशेष ही ने योग दिया था और उस ने इन्दौर राज्य की सेवा के नाम पर १५०००) खर्च कर के भी कोई व्यवहारिक प्रजा हितैषी कार्य नहीं किया, पर किसी खास समुदाय विशेष की राज्यकीय परिषद् में योग देना मैं पाप या अपराध नहीं समझता। मैं तो इन्दौर नरेश जैसे उदार महानुभाव से यह आशा रखता हूं कि वे शासन के मामले में अपनी प्रजा को मत देने का सुवर्णद्वार खोल दें। "म[illegible]तंसद,, को रद्दी की टोकरी में फेंकने योग्य पत्र न रख कर प्रजा मत को उद्दीप्त करने का उसे एक साधन बना दें। मेरा जहां तक अनुमान है इन्दौर के सार्वजनिक जीवन को कुचलने का पाप वर्तमान चीफ मिनिस्टर मि० गोविन्दराव ने किया है और श्रीमन्त महाराजा साहब से, उन के प्रजाजन की हैसियत से मैं विनय पूर्वक यह प्रार्थना करना चाहता हूं कि वे चीफ मिनिस्टर के इन अदूरदर्शिता पूर्ण कार्यों को रियासत की नेक नामी के लिये रोकें। मैं आशा करता हूं कि श्रीमान् मेरी इस न्यायोचित प्रार्थना पर ध्यान देंगे।

क्रमशः

"अजमेर में उत्साह।,,

(सिर्फ अजमेर वासियों के लिये।

अजमेर राजस्थान का हृदय है। मैं समझता था, राजस्थान में उत्साह नहीं तो न सही, उस की राजधानी अजमेर तो पूर्ण उत्साह से परिपूर्ण है।

अखबारों में शीर्षक निकलते———

''अजमेर में भीषण दमन,,

''अजमेर में उत्साह,,

मैं प्रेम के फूला न समाता। कोई हमदर्द अजमेर के विषय में लिखता है 'भीषण दमन,, अजमेर में भीषण दमन हो रहा है। वहां की प्रजा शान्त है! वहां उत्साह से देश का काम हो रहा है।

किन्तु अब वह बात गई। चाहे लाख उत्साह से कार्यकर्ता काम करें, पर जनता में वह उत्साह नहीं। उत्साह तभी होता है जब लोगों को बतलाया जाय, कि उन के ऊपर क्या हो रहा है और क्या होगा। लेकिन अब तो अ[illegible] साहब के दृष्टांत भी नहीं होते।

और तो और, सब से बड़ी खेद और आश्चर्यजनक बात तो यह है, कि तमाम भारतवर्ष में तिलक जयन्ती मनाई गई पर अजमेर में [illegible]। उस दिन मैंने कइयों से पूछा भाई! आज क्या है? उत्तर मिला— होगी कोई [illegible] त्योहार है। मैंने कहा आज तिलक जयन्ती है। उत्तर क्या मिलता है, मरने दो आपको तिलक! ये तो हैं यहां की जनता के विचार।

प्रकट करने पर असहयोग से सम्बन्ध छोड़ दो? पर आपने पूर्णतया खण्डन किया। बंगाल के वकीलों का प्रेक्टिस शुरू करने का प्रश्न छिड़ने पर आप ने कहा कि मैंने ऐसी सलाह नहीं दी है किन्तु यदि उन्होंने अनिवार्यता के लिये ऐसा किया है तो [illegible] नहीं कहा जा सकता। Responsive Cooperation की नीति के सम्बन्ध में आपने कहा कि यह लोकमान्य की नीति है। मैं इन्हें विभिन्न पक्ष नहीं समझता हूं किन्तु इन में इतना अन्तर नहीं है कि आपस में झगड़ा पैदा हो। यह मत आप का निश्चयात्मक मत नहीं था किन्तु केवल वार्तालाप के रूप में प्रकट किया था।

आगामी म्युनिसिपल चुनाव

कांग्रेस के प्रतिनिधि चुने जाने चाहियें

(ले० कुंवर चांद करण शारदा)

अजमेर नगर निवासी वैसे ही वर्षा न होने से अकालों पर अकाल पड़ने से, नौकरशाही के जुल्मों से महंगाई और पानी की किल्लत से घोर दुःखी थे, अब यहां की म्यूनिसिपैलिटी ने भी गरीब प्रजा पर जुल्म के पहाड़ ढाहने का सामर्थ्य किया है। दुनियां भर में व सारे भारत में retrenchment committies खर्च घटाने की सभायें काम कर रही हैं, सर्कार अपने खर्चे घटा रही है और यहां खर्च घटाकर टेक्स कम करने के स्थान में टेक्स और बढ़ाने की टेढ़ी सूझी है! गाड़ियों पर टेक्स, घरों पर टेक्स और ख्वाजा साहब की ज़ियारत करने वाले व पुष्कर तीर्थयात्रा करने वालों पर टेक्स लगाया जायगा। पुष्कर जाने वालों पर तो पहिले ही डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का ज़िज़िया प्रति गाड़ी पर ले लिया जाता है, अब यह दूसरा टेक्स और लगा-यानी डबल ज़िज़िया लगा। सारांश यह है कि यहां की चाल ही निराली है। जब प्रिंस आफ वेल्स अजमेर आने वाले थे तो अजमेर की पब्लिक ने कई सभायें करके म्यूनिसिपल कमेटी को समझाया था कि लोगों की गाढ़ी कमाई का रुपया इस प्रकार मत बर्बाद करो। परन्तु उस वक्त तो वह सर्कार की यगल की याग बन रही थी लोगों की कब सुनती थी और हज़ारों रुपये बर्बाद कर दिये। अब जब फिज़ूल खर्चों से दिवालिया बन गई है तो पब्लिक की मदद चाहती है। हम कहते हैं जावो सर्कार से ही रुपया लो। तुम हमारे नहीं हम तुम्हारे नहीं, क्योंकि तुम पब्लिक की राय इस प्रकार ठुकराते हो। हमारा तो मत है कि पब्लिक की राय [illegible] ठुकराने से वर्तमान म्यूनिसिपल कमेटी ने पब्लिक के प्रतिनिधि बनने का हक खो दिया है। अब तो नया चुनाव होना चाहिये और नये टेक्स नहीं लगाने का प्रस्ताव नई म्यूनिसिपल कमेटी के सामने पेश होना चाहिये एवं नई म्यूनिसिपलटी में कांग्रेस और खिलाफत कमेटियों से चुने हुये प्रतिनिधि चुने जाने चाहियें। परन्तु यदि अजमेर की पब्लिक ने इस कार्य में कांग्रेस खिलाफत को सहायता न दी और दबाव में आकर सर्कारी आदमी ऐसे ही खुशामदियों को चुन दिया तो फिर उनको किसी प्रकार की शिकायत करने का हक नहीं। चुनते समय तो खुशामदियों की खुशामद में आकर नालायकों को चुन देते हैं और फिर कहते हैं कि ज़ुल्म हो रहे हैं। दोनों बातें निभ नहीं सकतीं। इसलिये इस बार दिल्ली, अहमदाबाद, सूरत, नागपुर, जबलपुर, आदि स्थानों के समान कांग्रेस खिलाफत से चुने हुये लोगों को एक मन से चुनना चाहिये। यदि ऐसा हुवा तो निश्चय अजमेर म्यूनिसिपैलिटी सच्ची प्रजा की प्रतिनिधि हो जायगी और फिर कोई ज़ुल्म या अन्याय पूर्ण टेक्स कदापि नहीं लग सकेंगे।

लेकिन यदि वर्तमान म्यूनिसिपल कमेटी ने नये चुनाव [illegible] प्रजा की आवाज़ न सुनी और टेक्स लगाने पर उतारू ही हो गई तो फिर हमें [illegible] सत्याग्रह के दूसरे तीर छोड़ने चाहियें और वे ये हैं कि हम सवि[illegible] नय कानून भंग करें। यानी जब नये टेक्स वसूल करते आवें तो इनको न दें। इस पर वे कुर्कियें करावेंगे तो कुर्की कर लेने दें, परन्तु कुर्क किया हुवा सामान कोई भी न खरीदे। सारांश यह कि टेक्स के वसूल करने में म्यूनिसिपल का उतना [illegible] रुपया खर्च हो जितनी टेक्स से आमदनी भी न हो और फिर हारकर म्यूनिसिपल को यह नये टेक्स बन्द करने पड़े। परन्तु इस अन्तिम उपाय के पहिले यह उपाय करना चाहिये कि [illegible] सभायें एकत्रित कर [illegible] म्यूनिसिपल कमिश्नरों से [illegible] नये टेक्स का विरोध करें। यदि म्यूनिसिपल कमिश्नर कहें कि हम [illegible] [illegible] पूरी नहीं पड़ती है।

[illegible]

इसके सिवा [illegible] म्यूनिसिपल कमेटी [illegible] हिसाब [illegible] पब्लिक में [illegible]। फिर पब्लिक अपनी [illegible] एक कमेटी नियत करे [illegible] जांचे [illegible]। कहीं [illegible] ज़रूरत नहीं। [illegible] आश्चर्य की बात है कि [illegible] से तंग कर रही है और [illegible] म्यूनिसिपल भी [illegible] अपने ही [illegible] चाहिये कि [illegible] रही है और ऐसे [illegible] सर पर आफत मोल लेना [illegible] म्यूनिसिपल कमिश्नर [illegible] है कि सब म्यूनिसिपल कमिश्नर [illegible] हो कर नये टैक्स के [illegible] देंगे। नहीं तो आगे [illegible] नाम प्रतिनिधि कहाने का [illegible] हक न रहेगा।

मैं आजमेरिक नेताओं की निंदा नहीं करता, मेरी मुंह ही कौनसा है। हां पब्लिक की बुराई अवश्य करूंगा। देखो ना कितने ज़ोर से शराब का पिकेटिंग हो रहा है पर लोग शराब पीते हैं, क्या करें? विदेशी वस्त्रों पर पिकेटिङ्ग धड़ाधड़ हो रहा है परंतु लोग पुरानी मण्डी को विदेशी वस्त्रों से सजा कर नयी मण्डी बना रहे हैं।

नेताओं का कसूर ही क्या है—लोग क्यों उस वस्तु को बरतते हैं जो हानिकारक है। जनता को जानना चाहिये कि अमुक वस्तु अच्छी है या बुरी है। यह कोई नेताओं को सिर नहीं है कि वे ही सब कुछ बताते फिरें। लोगों को चाहिये वे अखबारों को मोल लेकर पढ़ें। यदि उनके पास पैसे नहीं हैं या वे पढ़ना नहीं जानते तो वे क्यों भारत में रहते हैं। अस्तु, मैं बी० ए० पास नेताओं से सदा से डरता हूं, किंतु कम पढ़ी जनता से मेरा कहना है कि "ज़रा उत्साह से काम करके अजमेर को दूसरे नगरों के सन्मुख मुंह दिखाने के लायक बना दो" इन का मुंह देखना छोड़ो, ये तो सिर्फ प्लेटफ़ार्म पर उछलना जानते हैं।

एन० एस० पगले।

भारतीय स्वतन्त्रत [illegible] ाग।

—शिवप्रसाद दास की रिहाई का समाचार प्राप्त होते ही १४ अगस्त को नागपुर में नगर कांग्रेस कमेटी की ओर से डा० खरे की अध्यक्षता में एक सार्वजनिक सभा हुई जिस में उन्हें बधाई दी गई।

—महात्मा भगवानदीन जी बैतूल जेल से छोड़ दिये गये और वहां धूम धाम से नगर में ले जाये गये। आप ने लोगों को कांग्रेस के कार्य पूरा करने के लिये जोरों से काम करने को कहा।

—बम्बई लेजिस्लेटिव कौंसिल में सरकार के साधारण सदस्यों ने राजनैतिक कैदियों के साथ अच्छा व्यवहार किये जाने के प्रस्ताव का विरोध किया था, किन्तु प्रस्ताव एक मत की अधिकता से स्वीकृत होगया।

—सूरत में कार्यकर्ता जनता को म्यूनिसिपल कर न देने का उपदेश दे रहे हैं क्यों कि म्यूनिसिपैलिटी को सरकार ने मोअत्तल कर रखा है। इसी प्रकार नड़ियाद में भी किया जा रहा है। कलेक्टर ने म्यूनिसिपल स्कूलों का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया है किन्तु म्यूनिसिपैलिटी रुपया देने से इन्कार कर रही है।

—तिलक की यादगार में बम्बई में होने वाली मीटिंग में मि० जिन्ना ने सभा के सभापति की हैसियत से तमाम राष्ट्रीय पक्ष वालों से ऐक्य रखने के लिये जोरदार अपील की है।

—बंबई क्रोनिकल न्यू इण्डिया में लिखता है कि यां [illegible] सुन कर यह मालूम होता कि [illegible] हिन्दुस्तान के साथ चाल खेल रहा है

हम मुसलमान भाइयों को इस प्रसंग पर कवि की एक उक्ति का स्मरण करा देते हैं, समझना न समझना उनकी इच्छा पर है:—

जो आपस में बैर करि, मिलें और के साथ।
वे भोगत हैं बहुत दुख, पड़ बैरी के हाथ॥

आशा है अजमेर और प्रान्त के हिन्दू मुसलमान इस बातों की ओर ध्यान देंगे?

एक विवेकी
भीमच सिव ली।

क[illegible]

[illegible] ने

कि[illegible] अविरल

मा[illegible] चुका है।

क[illegible] समिति ने अपना काम ब[illegible] कारगी एवं शान्ति के साथ सफलता पूर्वक समाप्त कर लिया है। बहुत से विदेशी कपड़ों के व्यापारियों ने जिन्हों ने अपनी प्रतिज्ञायें तोड़ दी थीं सच्चे दिल से पश्चात्ताप कर लिया है।

पण्डित मोतीलाल जी नेहरू और पी० सी० राय की दरख्वास्त पर [illegible] जेल में उन कैदियों ने जिन्हों ने खाना छोड़ दिया था। फिर से खाना शुरू कर दिया।

८ अगस्त को सुबह की गाड़ी से पं० दुर्गाशंकर मंत्री जिला कांग्रेस कमेटी पीलीभीत राय बरेली जेल से छूट कर पीलीभीत तशरीफ लाये।

मिस्टर N. C. Kelkar ने कांग्रेस की वर्किंग कमेटी की सेक्रेटरी के पद से इस्तीफा दे दिया।

लुधियाना कांग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी व प्रेसीडेण्ट को मजिस्ट्रेट ने यह नोटिस दिया है कि वे कारण बतावें कि उनसे जमानत क्यों न ली जाय।

रावलपिण्डी की अदालत में कौमी काम करने वालों के ऊपर लगाये गये अभियोग की पेशी हुई किन्तु अपराधियों ने अदालत के सवाल का जवाब देने से इन्कार कर दिया।

नड़ियाद म्यूनिसिपैलिटी के प्रेसीडेण्ट को सूचना मिली है कि बम्बई गवर्नमेंट ने प्राइमरी स्कूलों का प्रबन्ध [illegible] से उन्हें वापस [illegible] कर लिया है और उस ने सब म्यूनिसिपैलिटी की एक कमेटी बुलाई है।

जबलपुर की म्युनिसिपैलिटी कमेटी ने सत्याग्रह जांच कमेटी के स्वागतार्थ टाउनहाल पर राष्ट्रीय झण्डा लगा दिया है। इस पर जबलपुर डिवीज़नल कमिश्नर ने आपत्ति करने के लिये गवर्नर से प्रार्थना की थी। वहां से उत्तर मिला कि भारतीय जनता होने पर भी

यह प्रश्न स्थानिक स्वराज्य मिनिस्ट्री से तय किया जावे। तदनुसार स्थानिक स्वराज्य मिनिस्ट्री ने तय किया है कि कमेटी ने ठीक नहीं किया तथापि हम इस विषय में कुछ भी क्षति नहीं समझते।

उत्तरी मालाबार कांग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी जनता को सूचना करते हैं कि जब तक मुझ से निश्चित न करा ले कोई जिले में से खादी न खरीदे। क्योंकि यहां नकली खादियां बहुत बन रही हैं।

सेठ जमनालाल जी बजाज खद्दर विभाग के इनचार्ज अपनी खद्दी प्रचार की रिपोर्ट में लिखते हैं कि उन्होंने तिलक स्वराज्य फण्ड के ट्रस्टियों से खद्दर प्रचार के लिये ५ लाख रुपया प्राप्त किया है और एक लाख पचीस हजार तक चन्दे द्वारा एकत्र हुआ है एवं ५० हजार के वचन भी मिले हैं। अभी और अधिक धन की आवश्यकता है। भिन्न २ प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियों से भेजे हुए ८० विद्यार्थी खादी विद्यालय साबरमती में कातने बुनने की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। बम्बई में एक खद्दर सूचना विभाग स्थापित किया गया है। भिन्न २ प्रान्तों को फण्ड में से खद्दर तयार करवाने के लिये लोन दिये जा चुके हैं किन्तु जगह २ सुसंगठित खादी भण्डार खोले जाने की आवश्यकता है।

सिन्ध सत्याग्रह जांच समिति ने अपना कार्य पूरा कर लिया है और उस के सेक्रेटरी रिपोर्ट को अखिल भारतीय सत्याग्रह जांच समिति के सन्मुख रखने के लिये कलकत्ते लेगये हैं।

श्री० देशबन्धु दास की अभ्यर्थना करने के लिये टैरिश पार्क में एक [illegible] सभा हुई जिस में सत्याग्रह जांच समिति के सभी सदस्य थे। देशबन्धु को एक मान पत्र अर्पण किया गया।

मन्त्री और उपमन्त्री कांग्रेस कमेटी आजमगढ़ पर १०८ दफा के अनुसार मुकदमा चलाया गया। मुचलका न देने पर दो वर्ष की सख्त सजा दे दी गई।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

ताज़ा [illegible]

स्थानीय सम[illegible]

ता० ७ और ८ अगस्त को [illegible] मिक सभायें कांग्रेस और [illegible] जी और से [illegible] में हुई [illegible] श्री शंकर जी भार्गव के बारे में प्रस्ताव पास हुआ था कि उन्होंने चूंकि कांग्रेस के १२०००) रुपये बड़ी बे दर्दी के साथ हजम किये हैं यह सभा घृणा प्रकट करती है और लोगों को धोखे से बचने की सलाह देती है। उक्त प्रस्ताव के प्रत्युत्तर में भार्गव जी ने बड़े तीव्र शब्दों में प्रतिवाद किया है और [illegible] [illegible] पर लगाये हैं [illegible] किया है [illegible] लोगों का [illegible] है कि रुपयों के हजम कर [illegible] पूर्ण है।

राजस्थानी समाचार

[illegible]

[illegible] तक चर्खा कातने का प्रण [illegible]

[illegible] सुवर्णकार प्रधानक्षत्रिय [illegible] अधिकार के लिये [illegible] एक स्थान में [illegible]

[illegible] वाली [illegible]

[illegible] सरकार प्रकाशित [illegible] की जमीन एडेस्ता ने [illegible] और उसे केवल ७॥) रु० मासिक दिये जाते [illegible] यह जीवन निर्वाह के लिये [illegible]

[illegible]

— मि० [illegible] के [illegible] में [illegible] [illegible] करने [illegible] हैं कि [illegible] में अनि-वार्य [illegible] के लिये एक [illegible] है।

[illegible] कलकत्ते में [illegible] मालूम हो गया।

[illegible] की [illegible] ३ रोजमें [illegible] प्रस्ताव पास किया [illegible] जाति की सामाजिक [illegible] एक कमेटी नियु-क्त [illegible]

[illegible] ने अपने [illegible] सहित [illegible] का [illegible] किया।

[illegible] के [illegible] की [illegible] पूरी कर दी गई है। [illegible] कर [illegible] दी गई है।

[illegible] लिखता है कि आगामी [illegible] में मि० मांटेगू भारत की यात्रा [illegible]

[illegible] हिन्दुस्तान [illegible] में [illegible] हो गया।

श्री [illegible] ने [illegible] को [illegible] करने से इनकार कर दिया।

[illegible] जेल में [illegible] बहुत अधिक [illegible] हैं। [illegible] के [illegible] से [illegible] करने की अनुमति [illegible] किन्तु [illegible] कर दिया गया।

[illegible] ता० [illegible] से [illegible] की पुलिस [illegible] पर [illegible] कि [illegible] [illegible] के [illegible] पुलिस वालों ने [illegible] हिन्दू युवक को [illegible]

[illegible] है कि [illegible] लखनऊ में होने वाली [illegible] अखिल भारतीय रेलवे कान्फ्रेंस में [illegible]

आवश्यकता!

[illegible] विद्यालय के लिये [illegible] आवश्यकता है।

[illegible]

[illegible]

सावधान ! धोखेसे बचो, नकल स

(यदि हमारे कोकशास्त्र की तस्वीर देखकर आपका ... असली पूरा ना- कशमीरी कोकशास्त्र हमारे सिवाय और ... चुकी है। कई एक विज्ञापन बाज नकली पुस्तकें ... किस्म की स्त्री तथा पुरुषों की होती है, उनको ...

(दुरंगी ८४ तस्वीरोंवाला) रजिस्टर्ड सचि ... (रंगी ८४ तस्वीरोंवाला)

पं० मदनमोहन मालवीयजी के अभ्युदय प्रेस में छपा हुआ। **क ... स्त्र** कलकत्ता, बम्बई, और पूना में ३ रंगी तसवीरों में छपा हुआ।

श्रीमान पं० कोकाजा ... काश्मीर रचित जिसमें-

पद्मिनी, चित्रनी, संखनी, हस्तनी और, शशक, वृषभ, मृग, अश्व

इन चारों प्रकार की स्त्रियों तथा पुरुषों की पहचान उनका वर्णन स्त्री पुरुष का जोड़ा, स्त्री को आयु भर स्वस्थ सुन्दर, सौन्दर्य की देवी और अपनी आज्ञा मानने वाली बनाये रखना, मनचाही तथा बलिष्ठ सन्तान उत्पन्न करना, गर्भ में पुत्र, पुत्री की अवस्था नेक व बद की पहिचान। स्त्री पुरुषों के जोड़े जोड़ी का मिलाना सन्तान उत्पन्न न होती हो तो जरूर हो। आप पूरे सौ वर्ष तक हृष्ट, पुष्ट और स्वस्थ बने रहते. कुमारी भेद और लक्षण प्रेम, प्रीति, परदा स्त्री और पुरुष का पारस्परिक सम्बन्ध, स्त्रिओं का रजोदर्शन अथवा ऋतु, उसका समयिकज्ञान सहवासी विलासियों के लिये सहवास के नियम, गर्भाधान, चौरासी आसन, गर्भ परीक्षा, गर्भोत्पान, गर्भ वृद्धि रोकना, प्रसव और शिशुपालन, स्त्रियों के शृंगार, उनके सम्बन्ध के समस्त योग। ... और आनन्ददायक मसाले, स्त्री पुरुष के कोकशास्त्र सम्बन्धी रोग और उनकी अद्भुत गुणकारी औषधियां, कामोत्पादक दवाइयें, वशीकरण, स्त्री पुरुषों की ८४ तस्वीर तथा ८४ आसनों के दिलचस्प हाल दर्ज हैं. यही नहीं, स्त्री तथा पुरुषों की गुप्त बातें गुप्त बीमारियां आदि की ऐसी बातें जो ... लिखना उचित नहीं, पाठक! समझ लें हमारे कोकशास्त्र में हैं। कीमत सिर्फ ३)। फिर इस कोकशास्त्र की तस्वीरें देखो और उनके दिलचस्प हाल पढ़ो सेवकको वह सच्चा आनन्द होगा जोकि सैकड़ों पुस्तकों में तथा लाखों रुपये खर्च करके भी नहीं मिल सकता, परन्तु नक्कालों की पुस्तकों से बचो।

पता—विद्यासागर बुकडिपो नं २२ लुधियाना, पंजाब।

कुछ उत्तम पुस्तकें

१— राजस्थान और देशी राज्य दर्शन (देशी रियासतों की वर्तमान दशा का सच्चा चित्र) मूल्य बे जिल्द का १।) । जिल्द दार का १॥) ।
२— (स्वदेशी पर म० गांधी) (स्वदेशी की महिमा और लाभ) मू० ॥)
३— पंजाब का भीषण नर हत्याकाण्ड । ॥।=)
४— राष्ट्रीय उपदेश (स्वामी राम तीर्थ) मू० ॥।)
५— आयरलैण्ड की राज्य क्रांति (वीर श्रेष्ठ मैकस्वीनीके चित्र सहित) मू० ।)
६— वीर विनोद (महा भारत के कर्ण पर्व का छन्दोबद्ध अनुवाद) मू० २)
७— रत्नराज (हिन्दी साहित्य का प्रसिद्ध ग्रंथ) मू० ।=)
८— विविध संग्रह (राजपूताना की वीररसपूर्ण कवितायें) मू० ॥)
९— राष्ट्रीय मं (फ़ूल की कवितायें) मू० ॥)
१०— स्वराज्य वीणा (देश भक्ति की कवितायें) ॥=)
११— अमेरिका दिग्दर्शन (स्वा० सत्यदेव) १)
१२— भारत को स्वाधीनता का संदेश १।)
१३— बोलशेविज्म (रूस का नव जन्म) १।=)
१४— नवयुवकों स्वाधीन बनो (उपदेश) ॥)
१५— राजस्थान में बेगार -)
१६— राष्ट्रीय गान (जोशीले भाव पूर्ण गायन) =)

पता— राजस्थान साहित्य भण्डार
राजस्थान सेवा संघ अजमेर।

बूंदी राज्य में

स्त्रियों पर अत्याचार !

बूंदी रियासत के अधिकारियों ने किसानों की जागृतिको किस प्रकार दबाया, गरीब जनता को किस तरह दरख्त की ... में पीसा और निर्दोष स्त्रियों को भालों से छेद २ कर मारा, इसका लोमहर्षण वृतान्त । हर एक देश प्रेमी, और न्यायवान व्यक्ति को इसे पढ़ना चाहिये ।

प्रचार के लिये इसका दाम असली लागत से भी कम रक्खा गया है।

क्राउन ८ पेजी के १८ पृष्ठ (ढाई फार्म) की किताब का दाम सिर्फ तीन पैसा है। बांटने वालों को १) रु० की २५ या ३॥) रु० की १०० प्रतियां दी जायेंगी।

एक प्रतिके लिये ५ पैसे का टिकट आना चाहिये ।

पता—राजस्थान सेवा संघ अजमेर

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

धर्म, [illegible]
के हर्ष रोगों [illegible]
मूल्य फी शीशी १) [illegible]
डाक खर्च अलग। पता: बद्रिरत्न का [illegible]
महाजन मण्डल कोठी नं० ३ पीलीभीत यू० [illegible]

राष्ट्रीय पुस्तकें
अवश्य पढ़ो

भारतीय प्रजा. [illegible] — यदि यह जानना चाहते हो कि भूमि और अंग्रेजों ने ३३ करोड़ हिन्दुस्तानियों को किस प्रकार काबू कर रक्खा है और उस पंजे से आज़ाद होना चाहते हो तो इसको पढ़ो मूल्य केवल ।)

भारत विजय — (नवीन राष्ट्रीय नाटक) की० ॥।)

दुखी भारत (अथवा [illegible]) — जिसका नाम ही जाहिर है, की० ॥)

गीता सत्याग्रह — [illegible] पुस्तक। प्रत्येक [illegible] को अवश्य पढ़नी चाहिये की० ।)

जागृत भारत — राष्ट्रीय [illegible] कविताओं का संग्रह की० ।=)

[illegible] उक्ति [illegible] दर्द हिन्द [illegible] खद्दर की [illegible] सचित्र [illegible], डाक खर्च [illegible] पुस्तकों के ग्राहक को [illegible] माफ, [illegible] से कम की मंगाने वाले टिकट भेजें।

पता — [illegible] आफिस (५) — देहली

[illegible]

[illegible] सर्वोत्तम एक मात्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

[illegible]राजस्थान ३) में

[illegible] की [illegible] कविताएं [illegible] टिप्पणियां [illegible] विदेश विवरण [illegible] चाहे। [illegible] समाचार, अन्तर राष्ट्रीय [illegible] विषयों पर [illegible] और सामयिक लेख पढ़ना चाहें तो [illegible] क्योंकि एक [illegible] हमारे पास २००) रुपये इसलिए भेजे हैं कि ४०० [illegible] ग्राहकों को [illegible] के लिए नवीन राजस्थान ३) में दिया जाय।

व्यवस्थापक

हिन्दी नवजीवन

साप्ताहिक राष्ट्रीय [illegible]
[illegible] मोहनदास करमचन्द गांधी [illegible]

यदि आप महात्मा गांधी के [illegible] धर्म, स्वराज्य संग्राम [illegible] और असहयोग-आन्दोलन और अहिंसा [illegible] जानना चाहते हों तो नवजीवन [illegible] ग्राहक हो जाइए। वार्षिक [illegible] ४) [illegible] प्रति का [illegible])।

व्यवस्थापक "हिन्दी नवजीवन"
अहमदाबाद

देश पूजा में आत्मबलिदान

[illegible] के [illegible] मार्शल [illegible] हत्याकाण्ड [illegible] एक अपूर्व [illegible] लिखा है जिसे [illegible] भक्तों [illegible] आत्मबलिदान [illegible] महात्मा और [illegible] चरित्र [illegible] मूल्य [illegible]
प्रोप्राइटर
[illegible]

मदन मञ्जरी

पिछलों की तरह पहिले ही दिन फ़ायदा पहुंचाने वाली यह गोलियां रक्त को शुद्ध करती, धातु को पुष्ट करती, पाचन शक्ति सुधार कब्ज को साफ़ करती हैं और [illegible] का नाश कर [illegible] पुरुषत्व बख्शती हैं। मू० ४० गोली १) [illegible]

मुफ्त [illegible] मुफ्त

[illegible]

राजवैद्य नारायण जी केशव जी।
[illegible] आम [illegible], काठियावाड़

स्वदेशी कैंची-खद्दर

हमारे यहां [illegible] इंच २० [illegible] तक साफ़ मज़बूत कैंची तैयार होती हैं साथ विलायती कैंचियों से बहुत कम है।

खद्दर [illegible] [illegible] हर किस्म व साईज़, कम्बल [illegible] आदि की बहुत [illegible] हैं [illegible] अवश्य माल मंगाकर परीक्षा कीजिये।

स्वदेशी [illegible] कम्पनी
फिरतपुर (बिजनौर) यू. पी.

असली प्राचीन

[illegible] मूल्य [illegible]
[illegible] सिर्फ

सम्पादक [illegible] द्वारा [illegible] प्रकाशित।